कक्षा- नौवीं विषय – हिन्दी

कृतिका भाग- 1

पाठ-4 माटी वाली

लेखक- विद्यासागर नौटियाल

मॉड्यूल – 1/1

प्रस्तुतकर्ता – खीमाराम

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2, तारापुर.

1. परिचय

- प्रस्तुत पाठ के अंदर लेखक ने बड़े-बड़े बांधों के कारण होने वाले विस्थापित की समस्या को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इन बड़े-बड़े बांधों के निर्माण से छोटे-छोटे गांवों के गरीब और मजदूरों को होने वाली परेशानियां और उनकी विस्थापन के दर्द को लेखक ने अपनी कलम के द्वारा यहां पर
- उभारा है। उनकी रोजमर्रा की जरूरत है उनका जीवन उनकी रोजी रोटी और उनकी मजदूरी के साधनों आदि बातों को लेकर लेखक ने उन्हें बड़ी ही बारीकी से यहां पर उकेरा है। प्रस्तुत पाठ टिहरी बांध के कारण विस्थापन का दर्द झेलने वाले उन तमाम छोटे-बड़े, अमीर- गरीब आदि के दर्द की एक बहुत ही दर्द भरी कहानी है।

विश्लेषण

- **2. शहर के सेमल का तप्पड़..... हरिजन बुढ़िया माटी वाली।**

- टिहरी शहर के एक मोहल्ले का नाम है सेमल का तप्पड़ उस मोहल्ले में पहुंचकर के बुढ़िया ने अपने दोनों हाथों से अपने सिर के ऊपर रखी लोहे के कनस्तर बहुत बड़ी टोकरी को दोनों हाथों से नीचे उतारा और वह शहर के उस आखिरी घर में थी।टिहरी शहर का ऐसा कोई घर नहीं था जहां उसे कोई नहीं जानता हो या यूं कह सकते हैं कि जिसे वह नहीं जानती हो वहां के मूल निवासियों के साथ-साथ यहां तक कि वहां पर आकर किराए पर रहने वाले लोगों को भी हो बहुत अच्छी तरह से जानते थे और वे भी उसे बहुत अच्छी तरह से जानते थे।उस बुढ़िया का एकमात्र काम था शहर के प्रत्येक घर मैं घर घर में फूलों को ली अपने पूछने के लिए लाल मिट्टी मुहैया कराना। पूरे शहर के अंदर उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था।वह अकेली मात्र ऐसी औरत थी जो पूरे शहर में लाल लाल मिट्टी घर- घर पहुंचाने का काम करती थी। बदले में उसे या तो कोई रोटी सब्जी दे देता या पैसे।शहर के प्रत्येक घर को उसकी बहुत अधिक ज्यादा जरूरत थी क्योंकि उसके अलावा कोई भी लाल मिट्टी लाकर के दे नहीं सकता था |

2.

- तीज त्योहार या किसी पर्व के अवसर पर घरों की लिपाई पुताई करनी हो यह खाना बनाने के पश्चात10 दिन में दो-चार दिन में एक बार चूल्हे की लिपाई पुताई करनी हो और चौके को साफ सुथरा रखना हो उसके लिए लाल मिट्टी की जरूरत पड़ती ही थी और उसकी पूर्ति उस बुढ़िया के द्वारा ही होती थी।शहर का प्रत्येक घर उसका ग्राहक था, चाहे वह शहर का मूलनिवासी हो या बाहर से आकर किराए पर रहने वाला।शहर के लोग न केवल बुढ़िया को बल्कि उसके कनस्तर को भी बहुत अच्छे से पहचानते थे। क्योंकि पूरे शहर में उसके जैसा कनस्तर किसी के पास नहीं था हां लेकिन वह थी एक बहुत ही गरीब हरिजन बुढ़िया नाटे कद की छोटे कद की।

3.शहरवासी सिर्फ़.....इसी चाय के साथ निगल जा।

- शहर के लोग न केवल उसे बल्कि माटी वाले के कनस्तर को भी बहुत अच्छे से जानते थे | उसका कारण था केवल उसका ही कनस्तर ऐसा था जिसके ऊपर किसी भी प्रकार का कोई ढक्कन नहीं था।ढक्कन नहीं होने का प्रमुख कारण था कि उसके ऊपर माटी पूरी अच्छी तरह से छुलबुल करके भरी जा सके। बुढ़िया ने कनस्तर के ढक्कन को तोड़कर के फेंक दिया था।जैसे ही उसने शहर के उस आखिरी घर में अपने कनस्तर को उतारा सामने से 9 - 10 साल की लड़की आ करके उसको कहती है कि अम्मा, मेरी मां ने कहा है आप जरा हमारे घर में भी आना | अभी आती हूं , ऐसा जवाब बुढ़िया ने उस बच्ची को दिया। घर की मालकिन ने हरिजन बुढ़िया से कहा तू बड़ी भाग्यवान है, चाय के टाइम पर आई है। घर में भाग्यवान खाए वक्त आते हैं। वह अपनी रसोई से दो रोटियां लाई और उसे सौंपकर फ़िर से रसोई के अंदर घुस गई।

3.

- माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में सोचने का ज्यादा वक्त नहीं था। घर की मालकिन के अंदर जाते ही उसने इधर-उधर अपनी नजरें दौड़ाई तो उसने देखा कि इस वक्त वह केवल अकेली वहां थी| उसे कोई नहीं देख रहा था । उसने तुरंत एक रोटी अपने डिल्ले, डिल्ले का अर्थ होता है कपड़े का गोल घेरा जिसको सिर पर रख कर के उसके ऊपर आप भरी टोकरी रख सकते हैं , उसके किनारे को खोल कर उसके पल्लू पर एक रोटी को बांध दिया और एक रोटी को मुंह में डालकर जल्दी-जल्दी खाने का दिखावा करने लगी। मालकिन उसके लिए पीतल के गिलास में चाय लेकर आई और उसने उस गिलास को जमीन पर रखकर के बुढ़िया को चाय पीने के लिए बोल दिया और कहा घर में बासी साग - सब्जी कुछ नहीं है, तुम चाय के साथ ही यह रोटी खा लो।

4.माटी वाली ने..... ...गायब हो गए सब घरों से ।

- बुढ़िया ने चादर के किनारे से पीतल के गिलास को पकड़ा और जोर-जोर से मुंह से फूंक मारकर उसको ठंडी करने का प्रयास करते हुए धीरे-धीरे होठों से लगा कर के उसके साथ चाय के साथ-साथ रोटी को चबाकर के खाने लगी और खाते-खाते बोली- चाय तो बहुत अच्छा साग हो जाती है ठकुराइन जी।
- ठकुराइन बोली चाय तो अपने आप में एक साग होती है बुढ़िया। भूख मीठी कि भोजन मीठा।
- तुमने अभी तक पीतल के गिलास को संभाल कर रखे हैं पूरे बाजार में और किसी के घर में अब यह नहीं मिल सकते हैं।
- ठकुराइन बोली - इनके खरीददार भंगार वाले कई बार हमारे घर का चक्कर इन बर्तनों को लेने के लिए काट चुके हैं। मगर मैं औने - पौने दाम, में हराम के दाम में इन चीजों को नहीं बेचना चाहती हूं । बड़े ही मुश्किलों के दौर में हमारे पुरखों ने एक-एक पैसा बचा करके इनको खरीदा होगा । ऐसे में भला इतनी अमूल्य चीजों को मैं औने - पौने दाम में कैसे बेच दूं।ठकुराइन कहती जा रही थी बाजार में जाकर जरा पीतल के भाव को मालूम करो दाम सुनकर दिमाग चकराने लगेगा और यह व्यापारी हमारे घरों में हराम के भाव भांडे इकट्ठा करके ले जाते हैं । तमाम पुराने बर्तन भांडे, कांसे के बर्तन भी तो गायब हो गए आजकल सभी घरों से।

5.अपनी चीज का मोह..... ....घर में चली गई।

- बुढ़िया ने कहा इतनी दूर की और लंबी बातें बाकी लोग नहीं सोचते हैं आज जिस भी घर में जाओ वहां यि तो स्टील के बर्तन दिखाई देंगे या फिर कांच और चीनी मिट्टी के।अपनी चीजों का लगा लो या प्यार बहुत बुरा होता है मैं तो यह सोच कर पागल हो जाती हूं कि अब इस उम्र में इस शहर को छोड़कर हम लोग कहां जाएंगे।
- बुढ़िया कहती है ठकुराइन- जो जमीन जायदाद के मालिक हैं जो अमीर हैं, जो पैसे वाले हैं, वह तो कहीं ना कहीं जा कर के अपने लिए नया ठिकाना बना ही लेंगे या ढूंढ लेंगे, पर मैं सोचती हूं मेरा क्या होगा? मेरी तरफ तो देखने वाला भी कोई नहीं है न जमीन जायदाद है ना पैसा है ना पुत्र है कुछ भी नहीं है।
- अपनी बात को खत्म करके माटी वाली ने चाय खत्म करके अपना कपड़ा उठाया खाली कनस्तर उठाया और उस घर से बाहर निकल कर के सामने वाले घर की तरफ चली जाती है।

6.उस घर में भी..... ....बेगार करनी होती है।

- सामने वाले घर से भी उसे कल हर हालत में मिट्टी लेकर ही आना है कि आदेश के साथ दो रोटियां मिल गई। उन्हें भी उसने अपने कपड़े के एक दूसरे छोर से के साथ बांध लिय। लोग जाने तो जाने कि वह यह रोटियां अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही है। उसके घर पहुंचते ही उसका कमजोर और बीमार अशक्त बुड्ढा कातर नजरों से डरी हुई नजरों से उसकी ओर देखने लगता है और घर में रसोई बनने का इंतजार करने लगता है। आज वह घर पहुंचते ही सबसे पहले तीन रोटियां बुड्ढे के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही उसके उस बीमार और बुजुर्ग पति का चेहरा खिल उठेगा। बुढ़िया मन ही मन सोचती है। साथ में वैसा भी बोल देगी कि साग तो कुछ है नहीं आज ! क्या करेंगे? और फिर उसे वही चिर परिचित अपने बुड्ढे से जवाब सुनाई दे देगा- भूख मीठी कि भोजन मीठा।

6.

- बुढ़िया शहर से बहुत बाहर रहती थी कितना ही तेज़ चले तो भी शहर से अपनी कुटिया तक जाने में लगभग उसे एक से डेढ़ घंटा लग ही जाता था। वह रोज सुबह जल्दी निकल कर के माटाखाने जाती थी मिट्टी खोदने के लिए। वहां से मिट्टी खोदने के पश्चात उसको अपने कनस्तर में भरकर के टिहरी शहर के घर - घर पहुंचाने का काम वह पूरे दिन भर करती थी और फिर वहां से जो भी उसको मान सम्मान , रुपया पैसा या फिर रोटी सब्जी जो भी मिलता था उसे लेकर के शाम ढलते ढलते ही अंधेरा होते - होते वह अपने घर, अपने कुटिया पर, झोपड़ी में पहुंच पाती थी।
- उसके पास अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं था| न जमीन, न घर। उसकी झोपड़ी भी ठाकुर की जमीन पर बनी हुई थी| जिसकी एवज में उसे ठाकुर की ढेर सारी बेगार निकालनी पड़ती थी। बेगार एक ऐसा काम जो बिना पैसे के किया जाता है। उसकी झोपड़ी ठाकुर की जमीन पर ठाकुर के रहमों करम पर खड़ी थी।

7.नहीं .. आज वह एक गठरी में..... ...घर पहुँच गई।

- बुढ़िया यह सोचते हुए रास्ते भर जा रही थी कि अब गठरी में गोल मटोल हो चुकी हड्डियों के पिंजरे के अपने पति को कोरी रोटियां नहीं देगी। आज माटी बेचने से जो उसे आमदनी हुई थी उनके कुछ पैसों से उसने एक पाव प्याज खरीद लिए थे। वह घर पहुंचते ही सबसे पहले उन प्याज की सब्जी बनाएगी और सब्जी तैयार होते ही बुड्ढे के सामने दो रोटियों के साथ परोस देगी। वह सोचती है.. अब तो उसका पति इतना बुड्ढा और बीमार हो चला है कि दो रोटियां भी उसके लिए भारी होती है। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी थी। उसका बुड्ढा अब तीन रोटियां खा नहीं पाएगा।इस प्रकार से हिसाब लगाती हुई अपने घर पहुंच गई।

8.उसके बुड्ढे को ....खुद ही तय करनी पड़ेगी।

- मगर यह क्या जैसे ही वह घर पहुंची, रोज की तरह उसका बुड्ढा आज चौका नहीं| उसके पैरों की आहट सुनकर उसने अपनी नजरें नहीं उठाई। आज उसके बुड्ढे को उसके रोटी की कोई जरूरत नहीं रह गई थी। घबराई हुई माँटी वाली ने जब उसे देखा, जब उसे छुआ, तो पता चला कि वह तो अपनी माटी को ही छोड़ कर जा चुका था।
- टिहरी बांध के पुनर्वास के साहब ने उससे पूछा कि वह रहती कहां है? तुम तहसील से अपने घर का प्रमाण पत्र ले आना। मेरी जिंदगी तो इस शहर में तमाम घरों में माटी देते गुजर गई साह॥ साहब ने पूछा माटी कहां से लाती हो? बुढ़िया ने कहा- माटी तो माटाखाना से लाती हूं। क्या वह माटाखाना तेरे नाम पर चढ़ी है? अगर है तो हम तेरा नाम लिख देते हैं। बुढ़िया ने जवाब दिया- माटाखाना तो मेरी जान है, साहब मेरी रोजी है साहब। साहब बोले बुढ़िया हमें जमीन के कागज चाहिए रोजी का नहीं।
- बाँध बनने के बाद मैं क्या खाऊंगी साहब? अफसर बोला- इस बात का फैसला तो हम नहीं कर सकते यह बात तो तुझे खुद ही तय करनी पड़ेगी।

9.टिहरी बाँध की..... .....श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।

- बहुत ज्यादा बारिश होने के कारण टिहरी बांध की दोनो सुरंगों को बंद कर दिया गया था । शहर में पानी भरने लगा था ।पूरे टिहरी शहर में आपाधापी मची थी । शहर वासी अपने घरों को छोड़कर वहां से भागने लगे हैं पानी भर जाने से सबसे पहले कुल श्मशान घाट डूब गए। सारे के सारे श्मशान घाटों के अंदर पानी भर चुका है ।माटी वाली अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी है। गांव के हर आने-जाने वाले से एक ही बात कहती जा रही है - गरीब आदमी का शमशान नहीं उजड़ना चाहिए।वह अपने पति का अंतिम संस्कार भी नहीं कर पा रही थी । उसकी चिता को नहीं जला पा रही थी, क्योंकि सारे श्मशान घाटों में पानी भर चुका था।